International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 7, July- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

स्त्री अस्मिता एवं सुधा अरोड़ा

प्रतिभा कनोजिया, शोधार्थी,
हिंदी विभाग,
राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा
(कोटा विश्वविद्यालय,कोटा, राजस्थान)

डाँ. विवेक कुमार मिश्र, आचार्य
हिंदी विभाग,
राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा

सार

प्राचीन समय से समाज में स्त्री का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। स्त्री को पूजनीय माना गया है। साहित्य में स्त्री के अनेक रूपों को चित्रित किया गया है। समाज में स्त्री की स्थिति में बदलाव होता आया है। समाज में स्त्री को महत्वपूर्ण स्थान होने पर आज भी स्त्री को अपेक्षित सम्मान नहीं मिला। पुरुषों ने समाज में अपने अनुरूप समाज व्यवस्था का निर्माण किया और स्त्री को सीमित रखने का प्रयास किया। आज तक स्त्री इसे अपना भाग्य समझकर सहती रही। स्त्री अपने अधिकारों के प्रति संघर्ष कर रही है। समाज में स्त्री जिसकी अपेक्षा करती रही है, उन अपेक्षाओ का मोहभंग होता दिखाई देने लगा है। साहित्य में स्त्री की स्थिति का समय-समय पर विश्लेषण होता रहा है ।

मुख्य शब्द:- *समाज, स्त्री, साहित्य, सशक्तिकरण, अधिकार, अस्मिता, संघर्ष*

प्रस्तावना:-

स्त्री शताब्दियों तक निरंतर अनेक प्रकार के बंधनों परम्पराओं, कुरीतियों, प्रथाओं, में बाधित रही है । स्त्री अपना अस्तित्व भूल सी गयी है। वर्तमान समय में स्त्री सभी बंधनों को तोड़-कर घर की चार दीवारों के बाहर की दुनियां को देखने समझने का प्रयास कर रही है। जीवन जीते समय स्त्री संसार में दोहरी भूमिका निभाती रही है। संस्कृति, प्रथा, परम्पराएं आदि के नाम पर जाने-अनजाने में अपने उपर अनेक बंधनों को

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 7, July- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

लाद लिया है। वर्तमान समाज व्यवस्था में स्त्री सभी बंधनों नियमों के प्रति आंदोलन कर रही है। सुधा अरोड़ा जी ने स्त्री के संघर्ष तथा सामाजिक स्थिति के विषय में लिखा है, "औरतों के साथ यही हुआ है सदियों से, उनके अनुकूलन किया गया है वह हर तरह से तापमान की इस कदर अभ्यस्त हो जाती है कि एक नए घर के नए माहौल में नए लोगों के बीच धीरे-धीरे बढ़ते तापमान के साथ तालमेल बिठाना सीख जाती है और यह तालमेल अंततः उनकी मर्यादित शोभा यात्रा में उनकी मांग में सिंदूर के रूप में उनकी सजी हुई अर्थी में दिखता है"1 वर्तमान समय में स्त्री अपने अस्तित्व के प्रति सजग हैं। सुधा अरोड़ा जी ने अपने समग्र कथा साहित्य में स्त्री की विसंगतियों, अस्तित्व, भविष्य, पीड़ा, विद्रोह, संघर्ष, का स्वर कथा साहित्य में प्रकट हुआ हैं। सुधा अरोड़ा जी ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से समाज को प्रभावित करने में सफल रही हैं। सुधा अरोड़ा जी ने स्त्री के अनेक समस्याओं को लेकर कहानियाँ लिखी हैं। 'महानगर की मैथिली' इस कहानी में बंबई जैसे महानगर में स्त्री की समस्याओं और उसके संघर्ष का सूक्ष्म अंकन किया हैं। वर्तमान समाज में महानगरीय स्त्री अर्थ प्राप्ति के प्रति संघर्ष कर रही हैं जिसके लिए उसे यंत्र के समान जिंदगी जीना पड़ रही हैं जो उसे भीतर से तोड़ती हैं। जिससे स्त्री संघर्ष कर रही हैं।

"वहां का हर इन्सान इतना संतुष्ट सुखी और अवकाश प्राप्त दिखाई देता था कि अपनी बंबई की भाग-दौड़ वाली मशीनी जिंदगी उसे भीतर से तोड़ती हुई महसूस होती थी"2 स्वतंत्रता के बाद भी स्त्री अनेक प्रकार की कुरीतियो, प्रथाओं, विवाह, घरेलू हिंसा, सामान्य जीवन के अधिकारों की आवश्यकताएं को प्राप्त करने के लिए उसे स्त्री को संघर्ष के विविध रूपों का चित्रण किया है। माँ, पत्नी, बहन, बेटी, इसके जो अस्तित्व के लिए लड रही हैं, समाज में उस को सम्मान जनक स्थान नहीं हैं, इस वास्तविक यथार्थ का चित्रण किया हैं। सुधा अरोड़ा के कहानियों चित्रित स्त्री के विषय में डॉ. संजय ढोड़रे ने लिखा हैं। "अपनी अधिकतर कहानियों में सुधा अरोड़ा वंचिताओं, उपोक्षिताओं, दुःखी नारियों की पक्षधर हैं, लेकिन उनकी पक्षधरता और सहानुभूति केवल 'स्त्री' तक सीमित नहीं हैं उनकी कई कहानियों का कैनवास अपेक्षाकृत बड़ा हैं और

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 7, July- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

उसमें शोषण, व्यवस्था विरोध, बुठी पीढ़ी का दर्द साम्प्रदायिक हादसे सरीखे मुद्दे भी समाहित हैं।"3 महानगर की मैथिली, युद्धविराम, रहोगी तुम वही, अन्नपूर्णा मण्डल की आखिरी चिट्ठी, बगैर तराशे हुए, दमनचक्र, दहलीज़ पर संवाद, जानकीनामा, तानाशाही, कांसे का गिलास, आदि सुधा अरोड़ा जी की प्रसिद्ध कहानियाँ रही हैं। अपनी अधिकांश कहानियों में, स्त्री की संवेदना पीड़ा, दुःख घुटन, संत्रास, संघर्ष का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया हैं। तेजिन्दर कौर ने सुधा अरोड़ा के कहानियों में चित्रित स्त्री के संघर्ष के विषय में लिखा हैं।

"कहानियाँ स्त्री जीवन की विसंगतियों को उद्घाटित करते हुए उसे समाज में सही पहचान दिलाने की तरफ संकेत करती हैं। घर परिवार की विसंगतियों एवं संघर्ष से जूझती स्त्री अपने अस्तित्व की सही मायनों में पहचानने और पुरूष सत्तात्मक परिवर्तनों में अपनी जगह बनाने में संघर्षरत दिखाई देती हैं। इन कहानियों की स्त्री अपने आपको पुरूष के पांव की जूती न समझ कर पुरूष के समान अधिकार प्राप्त करने और हर क्षेत्र में उसके साथ बराबर में खड़े होकर जीवन जीने की इच्छुक हैं । आधुनिक समाज में स्त्री मुक्ति संघर्ष को संकेत करती सुधा अरोड़ा दबी - कुचली, अपमानित और प्रताड़ित औरत की प्रबल पैरोकार बनकर सामने आई हैं, जिन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से विगलित एवं सड़ी - गली परम्पराएं, और मान्यताओं, के विरूद्ध औरत की आवाज को बुलन्द किया हैं ।"4 भारतीय समाज व्यवस्था में स्त्री किसी भी रूप में क्यों न हो घर, परिवार, समाज में उसका पोषण होता रहा हैं, वर्तमान समाज व्यवस्था में भी इस परिस्थितियों में कुछ खास परिवर्तन नहीं हुआ हैं। सुधा अरोड़ा के, **21** श्रेष्ठ कहानियां, काला शुक्रवार, कांसे का गिलास, महानगर की मैथिली, अन्नपूर्णा मंडल की आखिरी चिट्ठी, बगैर तराशे हुए, औरत की कहानी आदि कहानी संग्रहों में स्त्री संघर्ष करती दिखाई देता हैं । स्त्री के विषय में पुरूष वर्ग की मानसिकता में अभी भी परिवर्तन दिखाई नहीं देता । स्त्री का एक कटपुतली के समान उपयोग किया जाता रहा हैं । स्त्री इस समाज व्यवस्था को अपना भाग्य समझकर झेलती रही हैं। तानाशाही कहानी में सुधा

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 7, July- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अरोड़ा जी ने लिखा हैं, "बस, तुम्हारी माँ ने प्रधानमंत्री के आने पर बढ़िया भाषण क्या दे डाला, स्कूल - कॉलेज वाले हाथ में फूलमालाएं, लिए खड़े रहते हैं । इस देश में स्त्री जाति की बड़ी केंद्र हैं । वह भाषण लिखा तो हमने ही था, आखिर!' और माँ वह दीन दुनिया को जिंदगी सुखी बनाने के चाहे जितने उपदेश दे लें, पिता जी के सामने उसकी जबान बड़ी खुलती।"5 स्त्री कितनी भी प्रगति क्यों न कर ले स्त्री के प्रति पुरूष समाज वर्ग की मानसिकता में बदलाव दिखाई नहीं देता । समाज में स्त्री आज अपने आपके असुरक्षित महसूस कर रही हैं। भ्रूण हत्या आज भी हो रहे हैं इस अधिकार से भी स्त्री को वंचित रखा गया हैं। स्त्री अब स्वतंत्रता की मांग कर रही है। स्त्री सीमाओं, मर्यादांओं की दीवारों को तोड़ कर अपने तरीके से जीवन जीना चाहती है। रीति-रिवाजें, परम्पराओं, मूल्यों को आवाहन देकर स्वतंत्र जीवन जीना चाहती है। सामाजिक दायरे में रहकर हिंसा और उत्पीड़न की शिकार रही है। स्त्री को जीवन जीते समय अपना मान-सम्मान, इज्जत, आबरू, दांव लगाकर जीवन जीना पड़ता हैं। स्त्री वर्तमान समाज में आत्मनिर्भर होकर अपनी स्थिति में सुधार लाना चाहती हैं ।

सुधा अरोड़ा ने लिखा हैं "आज भी हम स्त्रियों को उनका अपेक्षित सम्मान नहीं दिला पा रहें हैं ओर नहीं उनके लिये परिवार और समाज की ओर से वह सपोट सिस्टम तैयार कर पा रहे हैं जो उन्हें जीवन की विसंगतियों से, असुविधाओं और कठिन परिस्थितियों से जूझ ने के रास्ते मुहैया करवा सके । शिक्षित करके हमने उन्हें अर्थ अर्जन का रास्ता तो दिखा दिया, आत्मनिर्भर बनाकर उन्हें अपने पैरों पर खड़ा भी कर दिया, पर हम उन्हें जीवन जीने की कला, विपरीत परिस्थितियों से जूझ-ने का तरीका, अपने लिये एक दरवाजा खुला रखने का ढंग हीं सिखा पाये । आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर स्त्रियों भी भावनात्मक रूप से अपने पति का ही मुँह जोहती रही । भावनात्मक आघात ही अपने जीवन का अंत करने पर उन्हें विवश करते हैं।"**6** असमानता के कारण स्त्री में स्वतः विद्रोह खड़ा कर रही हैं । स्वतंत्रता के बाद में स्त्री-शोषण के विरूद्ध स्त्री में चेतना का स्वर उभरकर आया हैं । पुरूष सत्ता के विरूद्ध, सामाजिक, सांस्कृतिक,

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 7, July- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

नैतिक मूल्य, को समझा कर सामाजिक विद्रोह कर रही हैं। अपनी स्वतंत्र अस्मिता और सामाजिक स्वतंत्रता की पहचान को स्त्री महसूस करने लगी हैं। हमारे देश में स्त्री मुक्ति के लिए प्रयास भी किये गये, लेकिन कुछ महिलाओं तक ही सिमित रह गया । मैथिली शरण गुप्त 'यशोधरा' में यही कहते हैं ''अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी आंचल में हैं दूध और आंखों में पानी'' सुधा अरोड़ा जीने स्त्री अस्मिता के प्रश्न अपनी कहानियों में उठाये हैं । स्त्री को भावना को समाज के सामने रखने का प्रयास किया हैं उसकी गाथा जिसमें प्रतिकार का स्वर बुलन्द कर रही हैं । सुधा के कहानी पात्रों की स्त्री मातृत्व, त्याग, समर्पण, स्वचेतना का स्वर उभरा हैं । तानाशाही कहानी में "लड़कियों को सात ताले में बंद रखो, तो भी वो नदी-नाले लॉघकर अपने करतब दिखाकर रहेगी।''7

पुरूष सत्ता से बाहर आना चाहती हैं । बचपन में लड़की को पिता और भाई के नियंत्रण में रहना होता हैं, शादी के बाद अपने पति के आदेश पर जीवन जीना होता हैं, इसका प्रशिक्षण उस को बचपन से ही दिया जाता हैं । स्त्री सदैव एक वस्तु रही हैं जो पुरूष की इच्छाएं पूर्ति का साधन मनोरंजन, और सुख का साधन माना जाता रहा हैं । आज स्त्री घर की चार दीवारी में बंद होकर नहीं जीना चाहती । पुरूष के समान जीवन जी कर अपनी एक अलग पहचान निर्माण करना चाहती हैं, लेकिन समाज व्यवस्था की अनेक समस्याएं उसके सामने खड़ी होती हैं । समाज में फैली अनेक भ्रष्ट व्यवस्थाएं के प्रति संघर्ष करती हैं । ''मैंने अपने बॉस-मिस्टर बी. के. मनिहार के भ्रष्टाचार का पर्दाफ़ाश करना चाहा था और उसकी बड़ी महंगी कीमत मुझे चुका नी पड़ी थी।"8 पारंम्परिक समाज की दीवारों को तोडकर स्त्री 'स्व' के जीवन के फैसले लेने लगी हैं, परम्परागत मूल्यों को नकार रही हैं । किसी की दया का पात्र नहीं बनना चाहती। स्त्री का धर्म समाज की आड़ में हमेशा शोषण होता रहा हैं । अंधश्रध्दा के आड़ में स्त्री की अस्मिता को ठेच पहुँची हैं । सुधा अरोड़ा की कहानी 'देह धरे का दंड' धार्मिक विद्रोह करती हैं, "विशाखा को लगता वह एक जंगल में भटक गई हैं। चारों ओर भेड़िया ही भेड़िया हैं, चाहे वह गेरूआ कपड़े में हों या सफेद कपड़ों में, लगोटनुमा धोती में हों

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 7, July- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

या सूट-बूट टाई में । भेड़िया ही भेड़िया । नत्थू सिर्फ अँधेरे गलियारा से नहीं, कहीं से भी कोई भी, चेहरा पहन कर आ सकता हैं।''9 सामाजिक व्यवस्था को चुनौती देती हैं, आक्रोश विद्रोह करती है। भ्रष्टाचार, मक्कारी, चालबाजी, स्वार्थी मानसिकता, पुरूष के खिलाफ संघर्ष करती हैं । स्त्री एक ओर परंपरागत कुरीतियों से मुक्त होना चाहती हैं, दूसरी ओर पाश्चात्य संस्कृति से बचना भी चाहती हैं । सुधा अरोड़ा की कहानियों में स्त्री के विविध रूप हैं । अपने पिता भाई और घर की जिम्मेदारी संभालती हैं। 'तानाशाही' में लड़की परिवार को संभालते हुए अर्थ से भी जूझती है। स्त्री घर और घर के बाहर की जिम्मेदारियों को भी बखूबी निभाती रही हैं । मातृत्व द्वंद्व का शिकार रही हैं । अपने भविष्यकार प्रति सचेत हैं। 'बुत जब बोलते हैं' कहानी में देवयानी भी आत्म सम्मान के लिए अन्याय एवं अपमान को नकारते हुए संघर्ष का रास्ता चुनती है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. समाज में स्त्री की स्थिति तथा संघर्ष का अध्ययन करने के लिए
2. सुधा अरोड़ा के साहित्य में महिला सशक्तिकरण का अध्ययन करने के लिए

स्त्री विमर्श : आशय एवं परिप्रेक्ष्य

सदियों से होते आए शोषण और दमन के प्रति स्त्री-चेतना ने ही 'स्त्री-विमर्श' को जन्म दिया हैं। ''स्त्री-विमर्श आत्मचेतना, आत्मसम्मान, आत्मगौरव, समता और समानाधिकारी की पहल का दूसरा नाम हैं। स्त्री-विमर्श वस्तुतः स्वाधीनता की प्राप्ति के बाद की संकल्पना हैं फिर भी बीसवीं सदी के अंतिम दो दशकों में इस विचारधारा को अपनाने के लिए उपयुक्त परिवेश मिला।"10 स्वतंत्र भारत में स्त्री का स्वर प्रबलता से सुनाई देता हैं। प्रायः विमर्श एक पुरानी अवधारणा हैं। स्त्री विमर्श को स्त्रीवाद नाम से भी जाना जाता हैं। स्त्री विमर्श स्वर आज घर-परिवार तथा समाज में होने वाली स्त्रियों पर अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष कर रहा हैं। जिसके फलस्वरूप स्त्रियों ने स्वतंत्रता के लिए आवाज उठाई हैं। जिसमें विधवा पुनर्विवाह, बहुविवाह

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 7, July- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

विरोध, सती तथा पर्दा प्रथा का विरोध किया हैं और स्त्रियों को संविधान के आधार पर स्वतंत्रता मिली हैं। भारत में महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, जानकी देवी, रमाबाई, सावित्री बाई फुले, सरोजनी नायूडी, कस्तूरवा गांधी आदि ने स्त्री संघर्ष में बड़ा भारी योगदान दिया हैं। आज स्त्री समाज में होने वाले कार्यक्रम व आंदोलनों में बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रही है ।

सुधा अरोड़ा स्त्री विमर्श पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहती है कि "स्त्री विमर्श स्त्री सशक्तिकरण और स्त्री जागरूकता का प्रयास करने के लिए एक कारगर औजार है। नारीवादी लेखन आज के समय की जरूरत है। आधुनिकता और उदार सोच के तमाम दावों के बावजूद स्त्री की सामाजिक स्थिति या उत्थान में कोई बड़ा क्रांतिकारी परिवर्तन नहीं आया है। आज भी वे समझौतों और दोहरे कार्यभार के बीच पिस रही है। पुरुष सत्ता की नींव हमारे समाज में बहुत गहरे तक धंसी हुई है। इसे तोड़ना, बदलना या संवारना एक लंबी लड़ाई है। हर क्षेत्र में स्त्रियां अपनी-अपनी तरह से अपनी लड़ाई लड़ रही है। कथा साहित्य में भी स्त्री चेतना ने अपनी उपस्थिति पूरी गहराई और शिद्दत से दर्ज करवाई है पर, हिंदी साहित्य में तथाकथित स्त्री विमर्श इतने बौद्धिक स्तर पर है कि आम औरतें तक या उन औरतों तक जिन्हें जागरूक बनाने की जरूरत है यह पहुंच ही नहीं पाता। यह काम साहित्य की स्त्री विमर्शकारों से कहीं अधिक महिला संगठन और जमीनी तौर पर उनसे जुड़ी कार्यकर्ताएं कर रही है।"11

एक स्त्री का माँ रूपी रूप बड़ा ही दिव्य और अलौकिक होता है। बच्चा जन्म से ही माँ के सबसे करीब रहता है । माँ जो संस्कार अपने बच्चे को देती है । वही उसे आने वाले जीवन में आने वाली अनेक कठिनाईयों व परीक्षाओं से निजात दिलाता हैं। वह संस्कार उसे किसी भी वेद, पुराण, या कितने भी ग्रंथ पढ़ डाले आप प्राप्त नहीं कर सकते । एक स्त्री ही अपने बच्चे का ध्यान रखती हैं और उसे सारी बाधाओं से दूर और उसे स्वस्थ रखती है ।

हमारे भारत में सबसे बड़ी समस्या एक कन्या को माना जाता हैं। कन्या को विवाह के लिए सबसे बड़ी मुसीबत माना जाता हैं। क्योंकि समाज में जाति प्रथा प्रचलित हैं। जो शादी ब्याह में सबसे बड़ी रुकावट हैं।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 7, July- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

इसीलिए लड़की के विवाह के लिए जाति प्रथा और दहेज प्रथा के कारण एक पिता को भिखारी बनकर ही कन्या दान करना पड़ता है । लड़के के लिए अधिक दहेज मांगना व लड़की के लिए अधिक दहेज देना माता-पिता के लिए बहुत ही ज्यादा समस्या हैं। हमारे भारतीय समाज में स्त्रियों के विभिन्न संबंध व रूप हैं। जैसे माता का स्थान सबसे ऊंचा हैं। दूसरा पत्नी का हैं तथा उसके बाद कन्या का स्थान आता हैं। ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना मनुष्य को ही माना गया है । जो स्त्री तथा पुरुष दो रूपों में संसार की रचना करते हैं। स्त्री को पुरुष सम्प्रदाय में सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया गया हैं क्योंकि वह आगे चल कर पुरुष की शक्ति के रूप में उसके साथ ही खड़ी रहती हैं।

कथा साहित्य का आरंभ जीवन के प्रारंभिक चरण से ही माना जाता है । उसी समय से ही कथा साहित्य में स्त्री विमर्श तथा स्त्री चिंतन की शुरुआत हो जाता है। क्योंकि स्त्री व स्त्री विमर्श के बिना साहित्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती है तथा स्त्री के साहित्य को विमर्श किए बिना कोई भी साहित्यकार रह ही नहीं सकता है। वह स्त्री का पूरे साहित्य में वर्णन करता हैं। उसके अच्छे बुरे कार्य जो समाज में प्रेरणा देते हैं उसका भी खूब बखान करता है । एक स्त्री का साहित्य के ऊपर विमर्श अति आवश्यक है। स्त्री के द्वारा ही सृष्टि को रचा जाता है। जिससे मानव जीवन उत्पन्न होता है। इसीलिए स्त्री विमर्श एक स्वाभाविक क्रिया है । इस हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री के ऊपर इतना साहित्य लिखा हुआ है, जिसकी तुलना में कोई अन्य विषय की तुलना ही नहीं की जा सकती है। साहित्यकारों ने अपने-अपने साहित्य में स्त्री का सौंदर्य वर्णन अवश्य ही किया है ।

निष्कर्ष

स्त्री हर क्षेत्र में संघर्ष कर रही है । समाज की पारंम्परिक में बदलाव लाने का प्रयास कर रही है । आर्थिक आत्मनिर्भरता से कुछ हद तक स्त्री का स्वतंत्र अस्तित्व निर्माण हो सकता है। संघर्ष कर स्त्री आगे बढ़ने का प्रयास कर रही है। सामाजिक मूल्यों का पतन हो रहा है। सुधा अरोड़ा ने अपनी कथाओं में स्त्री के शोषण का सूक्ष्म चित्रण अपनी कहानियों में किया है। स्त्री के सशक्तिकरण पर बल दिया हैं। अतः महिलाएं यह समझे कि उनकी दुर्दशा की वजह क्या है, यह समझने के बाद सुधार प्रारंभ हो जाएगा। महिलाओं के लिए

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 7, July- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्वतंत्रता,समानता और सम्मान पूर्वक एक व्यक्ति के रूप में अपनी पहचान स्थापित करने का सकारात्मक वातावरण बनाना आवश्यक है।

संदर्भ

- सुधा अरोड़ा, एक औरत की नोटबुक, 2015, पृ. 24
- सुधा अरोड़ा, करवाचौथी औरत, 2023, पृ. 82
- सुधा अरोड़ा, काला शुक्रवार, 2004, पृ. 83
- 7. सुधा अरोड़ा, काला शुक्रवार, 2004,पृ.42
- 8. वही, पृ.82
- 9.सुधा अरोड़ा, अन्नपूर्णा मंडल की आखिरी चिट्ठी, 2014 पृ.116,117
- 11. स्त्री समय संवाद, संपादन अनिल अत्री, 2016, पृ.26